उलमाये देवबंद की कहानी उन्ही की ज़बानी

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786/92

ग़ैज़ में जल जायें बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिए

उलमाए दिवबन्द की कहानी उन्ही की ज़बानी

लेखक:
मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची
Mob:.9870742302

नाशिर
ग़ाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ारज़िला बहराइच शरीफ़ , यूपी

नाम पुस्तक : उलमाए दिवबन्द की कहानी
उन्हीं की ज़ाबानी

लेखक : मौलाना सिराजुल क़ादिरी बहराइची

सने इशाअत : 1435 हि०/ 2014ई०

तअदाद : ग्यारह सौ

मूल्य :

मिलने के पतेः–

न्यू सिलवर बुक एजंसी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
नाज़ बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
बुक सिटी, मोहम्मद अली रोड, मुम्बई
इक़रा बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बइ
उसमानियह बुक डिपो, मोहम्मद अली रोड, मुम्बइ
कुतुबख़ाना अमजदिया, देहली
मकतबा इमामे आज़म, देहली
ख़्वाजा बुक डीपो, देहली
ताजुश्शरीअह किताब घर, औरंगाबाद
शरीफ़ी किताब घर, चेम्बूर
गाज़ी बुक डीपो, दरगाह रोड, बहराइच शरीफ, यू. पी.
क़ादरी बुक डीपो, सुलतान मारकीट, नानपारह, बहराइज शरीफ़, यू.पी.
हाफिज़े मिल्लत किताब घर, बलरामपुर
मकबतुल-मुस्तफ़ा, बरेली शरीफ़
मकतबतुल हबीबियह, बघ्घी रोड,

शरफ़े इन्तेसाब

मैं इस किताबचह को उस नामवर अदीब व क़लमकार के नाम मंसूब करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ, जिस के फ़िक्र व शऊर के मीनारे आसमान की बलंदियाँ छू रहे हैं, जो अपनी ज़ात में अन्जुमन भी है और तंज़ीम भी, जिसने अदबियत के ख़ुश्क जज़ीरों की सय्याही करते हुए सहराई वुसअतों से ख़ेराजे तहसीन वसूल किया, जिन का क़लम आवारह मिज़ाज ओबाश वहाबियों की ज़िन्दगी को मुफ़लिस और बेचारगी का इबरतनाक मुरक़्क़अ बना देता है।

हाँ वही जो बदे बातिन की ख़ानह ज़नी की सारी सनाइयत को मायूस सहरा में तनहाई के नोहों में तबदील करके बातिल की हवस परस्तियों को तेज़ाबी ज़ाइक़ों से आशना कर देता है।

जिनकी दिलेराना तहरीरैं हर सरकश अदू व शोरिश ख़ेज़ दुश्मन के मक्र के जाल और ख़ुलूस के फ़रेब को हसरत भरी धुन्द की चादर में लपेट देने का फ़न रखती हैं। मसलक व मज़हब का दर्द और मिल्लत की शिराज़ह, बन्दी का ख़्याल जुनूँ की हद तक आप में मौजूद है।

जिन्हें अहले सुन्नत व जमाअत की इल्मी फ़िक्री दुनिया में अमीरुल क़लम फ़ख़्रे सहाफ़त हज़रत अल्लामह मक़बूल अहमद साहिब क़िब्लह सालिक मिसबाही के नाम से याद किया जाता है, जो बानी व मोहतमिम जामिअह ख़्वाजह क़ुतुबद्दीन बख़्तियार काकी नई देहली और चीफ़ इडीटर माहनामा ज़ियाए साबिर हैं, अपनी बे बुज़ाअती सरमायह अगर उनकी बारगाहे अक़ीदत में मक़बूल हो जाये तो सआदत समझूँगा।

यके अज़ गदाये उलमाये अहले सुन्नत

सिराजुल क़ादिरी बहराइची

अपनी बात

अलहमदुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन

अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रहमतल लिल्आलमीन

गुनाह करके एतराफ़े जुर्म ना करना संगीन गुनाह है और गुनाह की हिमायत करना उसके दिफ़अ में तावीलात पेश करके बे अैब साबित करना सब से बड़ा गुनाह है, बरसहा बरस से उलमाये दिवबन्द की किताबों में वह इबारतें छप रही हैं जिस को पढ़ कर अमल करने वाला दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है।

अकाबिरीने दिवबन्द की गुस्ताख़ियाँ और बेबाकियाँ जो उनकी किताबों से ज़ाहिर है उसे मौजूदह ज़मानह के उलमाए दिवबन्द किताबों से ख़ारिज करने के बजाए बेजा तावीलात पेश करके अपनी बातिनी ख़ुबासत का इज़्हार करते हैं।

माज़ी क़रीब में मेरी किताब मुजरिम अदालत में जब अवामी अदालत में पहुँची तो दुनियाये वहाबियत चीख़ उठी, होना तो यह चाहिए था कि जो हवाले किताब में दिये गये हैं उसे ग़लत साबित करते, मगर मोबाइल फ़ोन पर धमकियों, और फ़हश अलफ़ाज़ में गालियों का एक न थमने वाला सिलसिलह शुरुअ हो गया मजबूरन कुछ दिनों के लिए सिम कार्ड बदलना पड़ा, याद रहे कि मुजरिम अदालत में मुजाहिदे सुन्नियत नाशिरे मसलके आला हज़रत, हज़रत अल्लामह अब्दुस्सत्तार हमदानी साहिब क़िब्लह के मुसव्वेदे की इबारतें हैं जिस पर अल्लामह मौसूफ़ का हवाला ग़लत साबित करने वालों के लिए एक लाख रुपया का नक़द इनआम है।

जिस किताब की वरक़ गरदानी आप करने जा रहे हैं इसमें भी अल्लामह मौसूफ़ के मुसव्वेदे के मज़ामीन शामिल हैं। अगर दिवबन्दी वहाबी मोलवियों के पास जवाब हो तो मैदान में आयें और हवालह गलत साबित करें।

इस किताब में उलमाए दिवबन्द की बे हयाई, फ़हश कलामी और तवाइफ़ों से रब्त व ज़ब्त के वाक़िआत इक़तिबासात की शक्ल में हवालह के साथ मुलाहिज़ह करेंगे।

फ़क़त

गदाए कूचए मसऊदे ग़ाज़ी

सिराजुल क़ादिरी बहराइची

१७ रमज़ानुल मुबारक १४३३ हि०, ७ अगस्त २०१२

मनक़बत शरीफ़

अज़ अब्दुल माजिद रज़ा आसी समस्ती पुरी

मज़ारे आशिक़े ख़ैरुल वरा देखा बरेली में
जमाले गुम्बदे अहमद रज़ा देखा बरेली में

सुकूने क़ल्ब से हाज़िर हुए जब आस्ताने में
तो नूरे मुस्तफ़ा जलवह नुमा देखा बरेली में

रज़ा व हामिद व नूरी व रहमानी की तुरबत को
गुलाब व मुश्क व अम्बर से बसा देखा बरेली में

रज़ा मस्जिद में बैठे गुम्बदो मीनार को देखा
फ़िदाये आला हज़रत को फ़िदा देखा बरेली में

यक़ीनन आला हज़रत ही का यह फ़ैज़ान है आसी
बड़ा दिलकश रज़ा मेला लगा देखा बरेली में

मनक़बत शरीफ़

अज़ मुअज़्ज़म रज़ा ख़ान नूरी बरेली शरीफ़

जहाने कुफ़्र पर यूँ दबदबह था आला हज़रत का
कि हर एक दुशमने दीं पर था सिक्कह आला हज़रत का

अगर मअलूम हो जाता क़लम का शाह आता है
तो नज्दी छोड़ कर चलता था रस्तह आला हज़रत का

लियाक़त के फ़रासत के शरीअत के तरीक़त के
हैं क़ायेल आज भी दुशमन यह रुतबह आला हज़रत का

इलाही अहले सुन्नत पर तू अपना फ़ज़्ल फ़रमाना
बहक़्क़े ग़ौसे आज़म और सदक़ह आला हज़रत का

मज़ाहिब जितने बातिल है सभी की खोल दीं पोलें
अज़ीमुश्शान है यह कारनामह आला हज़रत का

दुआ ब बारगाहे रब्बुल उला जल्ल जलालहू

अज़ मोहम्मद शमीम राहत बरकाती, कटिहार (बिहार)

ख़ुदा से हमेशह दुआ माँगता हूँ
ग़ुलामिए अहमद रज़ा माँगता हूँ

गुनाहों में डूबा सरापा है मेरा
मरीज़े गुनह हूँ शिफ़ा माँगता हूँ

रज़ा की ग़ुलामी पे क़ायेम रहूँ मैं
ख़ुदा से यह तर्ज़े वफ़ा माँगता हूँ

न छूटे कभी हाथ से उनका दामन
यही एक दौलत सदा माँगता हूँ

है कुफ़्रे ज़लालत का ख़ुरशीद सर पर
सहाबे करम की घटा माँगता हूँ

नबी का ही नग़्मह सुनाने को हरदम
रज़ा जैसा मिदहत सरा माँगता हूँ

नहीं माँगना आता है फिर भी राहत
ख़ुदा से हमेशह दुआ माँगता हूँ

☆☆☆

फ़हश मिसालें और फ़हश कलामी

(1) बक़ौल थानवी : मियाँ बीवी ख़त के ज़रीओ इज़हारे मोहब्बत करें लेकिन मिलें नहीं तो औलाद न होगी, इसी तरह समराते ख़ास्सह के लिए सोहबते शैख़ ज़रुरी है।

(हवालह १ : हसनुल अज़ीज़, जि० १, हिस्सह १ क़िस्त १६ मलफ़ूज़ १९, स० २४)

हवालह २ : कमालाते अशरफ़ियह(१९९५) बाब १ मलफ़ूज़ ७५४ स० १९३)

(2) अपना कोई हाले बातिनी किसी पर ज़ाहिर करने वाले को थानवी ने कहा कि शर्म न आई अपनी बीवी को ग़ैर की बग़ल में देना किसी को गवारह हो सकता है ?

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० १, क़िस्त १६ हिस्सह १, मलफ़ूज़ ६२, स० ६२)

(3) थानवी का क़ौल मुलाहिज़ह हो, लोगों से लड़कों का मिलना ऐसा है जैसे लड़कियाँ ग़ैर लोगों से मिलें।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० १, हिस्सह १, मलफ़ूज़ ६६, स० ७०)

(4) निकाहे सानी के ज़िम्न में थानवी कहते हैं कि दियासलाई की नोक पर जो लगा रहता है वह सब में मौजूद है बहुत सो में रगड़ लग गयी है हम में रगड़ नहीं लगी।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, हिस्सह २, क़िस्त १७ मलफ़ूज़ १४९, स० १६९)

(5) कहीं मुलाज़िमत करने वाले को थानवी ने कहा तुम बड़े तेज़ हो निकाह कर लो सब जोश निकल जायेगा।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, हिस्सह १, क़िस्त १७ मलफ़ूज़ १४९, स० १६९)

(6) थानवी से एक शख़्स ने पूछा आप के पास रेंडी तो कोई नहीं आती कहा कि रेंडे तो आते हैं वह एक ही हैं चाहे रेंडी हों या रेंडे।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह २, क़िस्त १७ मलफ़ूज़ १७०, स० १८९)

(7) थानवी कहते हैं कि बअज़ लोग ऐसे आते हैं कि ख़ुद जी चाहता है कि हम से मुरीद हो जायें लेकिन ख़ुद कहने में शर्म आती है जैसे कि लड़की के निकाह में हमारी लड़की से निकाह कर लो कहने में शर्म आती है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ३, क़िस्त १८ मलफ़ूज़ ४५०, स० ७४)

(8) इबादत के लिए थानवी का नुस्ख़ह मुलाहिज़ह कीजिए, तरीक़ में अगर लज़्ज़त मक़सूद है तो बीवी को बग़ल में लेकर ज़िक्र करें ख़ुदा की क़सम बहुत लज़्ज़त आएगी एक ज़ब्र इधर हो एक ज़ब्र उधर हो।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ३, क़िस्त १८ मलफ़ूज़ ५०६, स० १५४)

(9) बे दिली से तअलीम करने के ज़िम्न में थानवी का मुजर्रब नुस्ख़ह कि सोहबत के वक़्त औरत मर्द दोनों को शहवत होना चाहिए और हमल क़रार पाने के लिए तवाफ़िक़े इन्ज़ालैन शर्त है वरनह हरकाते मुतअेबह हो ही जायेगी लेकिन नस्ल नहीं चलेगी ख़्वामख़्वाह बेचारी को तंग किया, जाड़े में नहाने की तकलीफ़ दी इसी तरह बे दिली से तअलीम करना बिलकुल ऐसा ही है जैसे बिला शहवत सोहबत करना।

(हवालह १ : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ३, क़िस्त १८ मलफ़ूज़ ५३८, स० १९२)

(हवालह २ : कमालाते अशरफ़ियह, बाब १ मलफ़ूज़ ९२८, स० २३२)

(10) बक़ौले थानवी, निकाह करते वक़्त मर्द और औरत का एक दूसरे से बच्चह जनवाने का वअदह लेना नादानी है इसी तरह मुरीद का पीर से कोई चीज़ हासिल करा देने का गुमान भी नादानी है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ४, क़िस्त १९ मलफ़ूज़ ६१९, स० ९६)

(11) थानवी कहते हैं कि बूढ़ों के मक़ाबिले में जवान में इसमत ज़्यादह होती है बूढ़ों मे शहवत ज़्यादह होती है लिहाज़ा बूढ़े आदमी से औरतों को ज़्यादह बचाओ।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ४, क़िस्त १९ मलफ़ूज़ ६२३, स० १२१)

(12) थानवी कहते हैं कि ज़िक्रे लिसानी से लोगों की जान निकलती है बस यही कहते हैं कि मज़ह नहीं आता मैंने इस पर कहा था कि मज़ह तो मज़ी निकलने में आता है लोहे के चने चबाने में मज़ह कहाँ।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द ३, हिस्सह ३, क़िस्त १४ स० ६)

(13) थानवी जी की ख़ुबासत मुलाहिज़ह फ़रमाइये कि औरतें बहलाने के लिए हैं रोटियाँ पकाने के वास्ते नहीं।

(अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जिल्द २, क़िस्त १० मलफ़ूज़ ८९२, स० ५०२)

(14) बक़ौले थानवी कुँवारी लड़की और बेवह से निकाह करने में यह फ़र्क़ है कि कुँवारी लड़की को जिस रंग में चाहो ले आओ लेकिन बेवह में अगले शौहर का असर होता है इसी तरह जो शख़्स किसी का मुरीद रह चुका हो उस में अगले शेख़ का कुछ न कुछ असर ज़रुर रहता है।

(अलइफ़ाज़ातुल यौमियाह (दिवबन्द) जिल्द ३, क़िस्त १८ मलफ़ूज़ ५४३, स० ५९)

(15) यअक़ूब नानोतवी कहते हैं दुनिया दार का एतक़ाद ऐसा है जैसे गधे की फ़लाँ चीज़, बढ़ता है तो बढ़ता ही चला जाता है और घटता है तो घटता ही चला जाता है यहाँ तक कि नर व मादह का भी इमतियाज़ नहीं रहता (मनक़ूल अज़ थानवी)

नोट : गधे की फ़लाँ चीज़ से मुराद उसका अज़्वे तनासुल है।

(हवालह १ : हसनुल अज़ीज़, जिल्द ३, हिस्सह ३, क़िस्त १४ स. २६)

(हवालह २ :अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जिल्द२ , क़िस्त ७ , मलफ़ूज़ ३४४ , स० १९१)

(हवालह ३ : मआरिफ़े यअक़ूबी स० ८३)

(16) बक़ौल थानवी माँ के पेट से निकलने को कब जी चाहता था दाई ने टाँगें पकड़ कर ज़बरदस्ती खींच ली।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जिल्द१ , क़िस्त ५ , मलफ़ूज़ १००५ , स० ४९८)

(17) ज़ौक़ी उमूर के ज़िम्न में थानवी ने कहा कि कोई कितना ही बड़ा आलिम हो वह इन उमूर से ऐसा ही अजनबी है जैसे ऐनैन (बमअना नामर्द) औरत की लज़्ज़त से अजनबी होता है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़ , जिल्द ३ , हिस्सह ३ , क़िस्त १४ मलफ़ूज़ ११३)

(18) थानवी कहते हैं कि ऐनैन (नामर्द) क्या जाने कि निकाह में क्या मज़ह है और मनकूहा कैसी क़ाबिले क़द्र चीज़ है इसी तरह जिनकी बातिनी आँखे पट (बन्द) हैं वह बातिनी दौलत की हक़ीक़त क्या समझें।

(हवालह : कमालाते अशरफ़ियह (१९९५) बाब १ , मलफ़ूज़ १०४ , स० ४६)

(19) बक़ौल थानवी जिसको जवानी में लज़्ज़त हासिल हो चुकी हो बुढ़ापे में उसकी लज़्ज़त कम नहीं होती जैसे पुरानी जोरु में उन्स (मोहब्बत , चाहत) की ज़्यादती होती है।

(हवालह : कमालाते अशरफ़ियाह(१९९५) बाब १ , मलफ़ूज़ ११८ , स० ४९)

(20) थानवी कहते हैं कि बच्चों पर और औरतों पर सब आशिक़ होते हैं मगर बूढ़ों पर इश्क़ होते हुए उन्हीं हज़रात में देखा ऊपर से अक़ली इश्क़ तो होता है मगर बहुत से हज़रात को अपने मुर्शिद से तबई इश्क़ भी होता है और यह तो मुशाहिद हैं फिर भी ख़ुदा तआला से तबई मोहब्बत नहीं होती तो उस मुनकिर की मिसाल ऐसी है जैसे ऐनैन (नामर्द) कहे कि औरत में लज़्ज़त नहीं।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़ , जिल्द ३ , हिस्सह १ , क़िस्त १२ स० २०३)

(21) बेवह से निकाह करना सुन्नत है यह कहने वाले को थानवी कहते हैं कि चाहे सुन्नत (अज़्वे तनासुल) ही के लिए करते हैं।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ३, क़िस्त १८ मलफ़ूज़ ५०९, स० १५९)

(22) थानवी कहते हैं कि फ़ासिक़ फ़ाजिर की शहवत कुछ आँख की राह से कुछ ख़्यालात की राह से निकल जाती है मुत्तक़ी का सब ज़ख़ीरह कोठरी में रहता है उन्हें कुव्वत ज़्यादह होती है लिहाज़ा औरतों को बुज़ुर्गों से बचाना चाहिए।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह ४, क़िस्त १९ मलफ़ूज़ ६२३, स० १३०)

(23) थानवी ने एक मोलवी से सुरीन (चूतड़) का अरबी लफ़्ज़ पूछा मोलवी साहिब ने कहा अरबी में सुरीन नहीं होता फिर उसकी अरबी कहाँ से हो।

(हवालह १ : हसनुल अज़ीज़, जिल्द २, हिस्सह २, क़िस्त १५ मलफ़ूज़ ३७७, स० १४६)

(24) थानवी का शरारती क़ौल कि इन्ज़ाल के वक़्त जब कि बीवी के सिवा और कोई चीज़ में नज़र नहीं होती उस वक़्त ख़ुदा को याद रख्खो।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह, (दिवबन्द) जिल्द १, क़िस्त ४ मलफ़ूज़ ९४९, स० ४७४)

(25) मोलवी अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि शौहर की दस्तख़त न हो ऐसा किसी औरत का ख़त पढ़ना ऐसा है कि जैसे बिला शुबह शौहर की मौजूदगी में आस पास बैठ कर उस से बातें करना।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह, (दिवबन्द) जिल्द ४, क़िस्त २४, मलफ़ूज़ ३०९, स० ३६८)

(26) थानवी ने कहा कि औरत के इश्क़ में ज़ुलमत होती है और मर्द के इश्क़ में ज़ुलमत शदीद होती है औरत तो अमले

तमत्तोअ है लेकिन हर अमले तमत्तोअ फ़ितरतन हैं ही नहीं।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह १, मलफ़ूज़ २६, स० २६)

(27) थानवी का कहना है कि हसीन औरत को देख कर बुरा ख़्याल आये तो बद सूरत का मुराक़िबह करे वह ख़्याले बद जाता रहेगा।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह १, मलफ़ूज़ २९, स० २८)

(28) कम उम्र वाले से पर्दह करने पर थानवी ने कहा कि जब वह छोटा सा (बच्चह) आ जायेगा तब मअलूम होगा कि यह कैसा छोटा है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सह १, मलफ़ूज़ ५४, स० ४१)

तफ़रीहे तबओ दिवबन्द

मोहतरम हज़रात! आप ने फ़हश कलामी और उसी तरह की मिसालें पढ़ लीं, मनचले और आशिक़ मिज़ाज लोगों ने किस क़द्र बेहयाई का मुज़ाहिरह किया है थानवी जी ने कभी बूढ़ों के इश्क़ का तज़किरह किया तो कभी बीवी के साथ इन्ज़ाल होने के फ़वाइद से आगाह फ़रमाते हैं, तो दूसरी जानिब अपने मुरीदों और पैरुकारों को अपनी अपनी लड़कियों को बूढ़ों और बुर्ज़ुगों से बचाने का पैग़ाम दे रहे हैं।

वह ज़बानें कितनी ग़लीज़ और कितनी शातिर व अैयार रही होंगी जिस ने फ़हश मिसालें, इश्क़यह जुमलों और नाज़ेबा कलिमात से मोअतक़िदीन को समझा कर उनके ज़ौक़े तबअ का सामान फ़राहम किया है।

मुन्दरिजह बाला इबारात में कितने ख़ामोश इशारे पोशीदह हैं उसके इज़हार की ज़रुरत नहीं, ताहम यह सवाल अपनी जगह बरक़रार है कि अगर मुरीदों की ज़बानें बेक़ाबू हो

गयीं थीं तो पीर को ज़रुर एहतियात करनी चाहिए हालांकि पीर व मुरीदैन और मोतक़िदीन किसी की ज़बान बेक़ाबू नहीं थी सिर्फ़ लज़्ज़ते नफ़्स का मआमिलह था वरनह यह कहने की क्या ज़रुरत थी कि बीवी को बग़ल में लेकर ख़ुदा का ज़िक्र करो क़सम ख़ुदा की लज़्ज़त आएगी, एक ज़ब्र इधर हो और एक ज़ब्र उधर हो। (मआज़ अल्लाह) दर हक़ीक़त नजिस ख़मीर का नतीजह है रब तआला का इरशाद है।

अल ख़बीसातु लिल ख़बीसीना वल ख़बीसूना लिल ख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबीना वत्तय्यिबूना लित्तय्यिबात। गन्दियाँ गन्दों के लिये और गन्दे गन्दगयों के लिये और सुथरियाँ सुथरों के लिये और सुथरे सुथरियों के लिये (कंज़ुल ईमान पारह १८, अन्नूर आयत नं० ७)

मअलूम हुवा कि ख़बीस लोग ख़बीस ख़सलतें अख़्तियार करते हैं और अच्छे लोग अच्छी ख़स्लतें अख़्तियार करते हैं यही वह अशरफ़ अली थानवी हैं जिन की तअलीमात को आम किया जाता है जिनकी तसनीफ़ात को तक़सीम किया जा रहा है। ईमानदारी से बताइये अगर गन्दी इबारतों की जगह कुरआन व हदीस से मिसालें दी जातीं तो क्या क़बाहत होती। क्या यह सब इस्लामी तअलीमात के मवाफ़िक़ हैं?

क्या ख़िलाफ़े शरअ अफ़आल सरज़द नहीं हुए हैं? क्या इसका इरतकाब करने वाले मुजरिम नहीं हैं?

ज़रुर हैं। और यह सब बातें कुछ जिद्दत व बिदअत पसन्द लोगों को इस तरह भा गयी हैं कि आज इस्तेआरह बन गयी हैं सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं

नजदी, तुझको उसने मोहलत दी कि इस आलम में है

काफ़िर व मुरतद पे भी रहमत रसूलल्लाह की

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तवायेफ़ और अकाबिरीने दिवबन्द

(1) मेरठ में एक रैंडी का नानोतवी के पास अपनी लड़की के हमराह आकर कहना : कि मेरी छोकरी बीमार है और मेरी बसर औक़ात इसी पर है आप तअवीज़ दो, नानोतवी ने उसको मकान की ऊपर वाली मंज़िल में ठहरे हुए मोलवी यअक़ूब नानोतवी के पास भेजा मोलवी यअक़ूब ने रैंडी को तअवीज़ दिया दुआ कर दिया लड़की को आराम हो गया, रैंडी का धन्धा शुरु हो गया तो रैंडी शुकरियह में मिठाई लायी और यअक़ूब को देकर चली गयी।

(हवालह १ : हिकायाते औलिया हिकायत ३६७, स० ३३९)

(हवालह २ : अरवाहे सलासह, हिकायत ३६७, स० ३२२)

(हवालह ३ : मआरिफ़े यअक़ूबी, स० ७४)

(2) रैंडी के बनाये हुये कूँवें का पानी पीना और वज़ू व गुस्ल करना दुरुस्त है।

(हवालह १ : फ़तावा रशीदियह, स० ५७१)

हवालह २ : फ़तावा रशीदियह (पुरानी १३६३ हि०) जि०२, स० ९८)

(3) थानवी के मामूँ से उनके पीर भाई ने कहा कि हमारे पीर साहिब के पास रात में रैंडियाँ आती हैं, मामूँ ने कहा अल्लाह आप को जज़ाये ख़ैर दे पीर साहिब ने निकाह नहीं किया था मुझे शुबह था कि यह ऐनैन (नामर्द) हैं और यह हज़रात वारिस होते हैं अम्बिया के और अम्बिया मर्दे कामिल होते हैं लेकिन पीर साहिब के मुतअल्लिक़ ऐनैन होने का शुबह एक नुक़्स था लेकिन आप के कहने के मुताबिक़ रैंडियाँ आती हैं तो

मअलूम हुवा कि पीर कामिल हैं आप ने मेरे शुबह को रफ़अ कर दिया अब रहा यह रैंडियाँ आती हैं यह एक गुनाह है तौबह करके पाक व साफ़ हो जायेंगे।

(हवालह १: अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० १, क़िस्त २, मलफ़ूज़ ४३७, स० २२०)

(हवालह २: अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (थानाभवन) जि० २, हिस्सह १, क़िस्त ४२, मलफ़ूज़ ४३६, स० ३९५)

(4) ज़ामिन अली जलालाबादी जिनके मुतअल्लिक़ गंगोही ने कहा कि ज़ामिन अली की सहारनपुर की तमाम रैंडियाँ मुरीद थीं, एक मरतबह वह सहारनपुर में एक रैंडी के यहाँ ठहरे हुए थे सब मुरीदनियाँ मिलने आयीं लेकिन एक नहीं आयी फिर जब वह आयी तो पीर साहिब ने न आने की वजह पूछी तो कहा रुस्याही की वजह से ज़ियारत को आते हुये शरमाती हूँ पीर ने कहा शरमाती क्यों हो करने वाला कौन और कराने वाला कौन वह तो वही है। रैंडी यह सुनकर आग हो गयी लाहौल पढ़ी और कहा मैं गुनाहगार हूँ लेकिन ऐसे पीर के मुँह पर पेशाब भी नहीं करती यह कह कर वह उठ कर चली गयी।

(हवालह १: तज़किरतुर्रशीद जि० २, स० २४२)

हवालह २: अद्देवबन्दियह (अरबी) स० ४०)

(5) घिस्सन शाह को मिलने थानवी तवायेफ़ के कोठे पर गये वहाँ जाकर मिठाई पेश करके दुआ की दरख़्वास्त की।

(हवालह: अशरफुस्सवानेह, जि० १, स० १२०)

(6) थानवी ने क़िस्सह बयान किया कि सन्दीलह नाम की बस्ती में क़हेत के साल रैंडियों की दुआ के सबब बारिश हुई।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १४, मलफ़ूज़ ५६८, स० ३७६)

(7) थानवी कहते हैं कि एक हसीन औरत का शौहर किसी बदसूरत रैंडी पर आशिक़ है उसकी बीवी ने ख़ादिमह के ज़रिऐ तहक़ीक़ की तो मअलूम हुवा कि जब वह जाता है तो

भड़वा कह कर जूते मारती है बीवी ने भी इसी तरह किया तो उसने रैंडी को छोड़ दिया।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १३, मलफ़ूज़ ३२३, स० २४६)

(8) बक़ौल थानवी : मोलवी और रैंडी के मुलाज़िम बे फ़िक्र होते हैं क्योंकि हर दो फ़िरक़े मख़दूम होते हैं दोनों के ख़ादिम बहुत होते हैं एक को काम कहो दस दौड़ते हैं बस मुलाज़िम नवाब बन जाते हैं।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़ जि० २, हिस्सह १, मलफ़ूज़ ८, स० १६८)

(9) कश्फ़ क्या कसबी है पूछने वालों को थानवी ने कहा कि कसबी (यअनी की रैंडी) तो फिर भी किसी की मतलूब है और अगर रैंडी से निकाह कर लो तो बे ख़तरह भी होगी लेकिन कश्फ़ तो निरा तबलची और पुर ख़तर है कश्फ़ कसबी को थानवी ने रैंडी (कसबी) पर इस्तिदलाल किया।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १४, मलफ़ूज़ ७६७, स० ४४८)

(10) बक़ौल थानवी : थानवी के भाई अकबर अली ने ट्रेन के सेकेन्ड क्लास में रैंडी के हमराह सफ़र किया रैंडी अपने साथ खाना लायी थी वह अकबर अली ने खाया।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) हिस्सह ३, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ५९७, स० ९३)

(11) नये आने वालों के साथ थानवी जी जल्द तवज्जोह नहीं करते थे उसकी वजह बयान करते हुए मिसाल में थानवी ने कहा कि रैंडी और घिरि सतन ज़रा मुश्किल से रज़ामन्द होती है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ६१९, स० ११०)

लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह

अकाबिरीने दिवबन्द जिसमें ख़ास कर अशरफ़ अली थानवी को तवाइफ़ों से क्या गहरा तअल्लुक़ और उन्स था यह वही लोग समझें जो उनके पैरुकार हैं। हमें सिर्फ़ उनके

कारनामों को अवाम तक पहुँचाकर अदालत में मुजरिमों को खड़ा करना है इस उम्मीद से कि आप का फ़ैसिलह हक़ बजानिब होगा।

आप ग़ौर करें कि शरीफ़ुन्नफ़्स और शरीफ़ुत्तबअ इंसान ऐसी बदनाम गुज़रगाहों से गुज़रना भी तौहीन समझता है मगर आँजनाब तवायेफ़ के कोठे पर जाकर दुआ की दरख़्वास्त कर रहे हैं। रैंडियों का पेशह क्या होता है इसको सभी लोग जानते हैं, थानवी जी ने उन्हें मुसतजाबुद्दअवात साबित किया और कहते हैं कि उनकी दुआओं से क़हेत साली का मौसम जाता रहा और उस इलाक़ह में कसरत से बारिश हो गयी।

पीर साहिब के मर्दाना कमज़ोरी का इलाज और उनके मर्दे कामिल होने के शुबह को तवाइफ़ों की आमद पर महमूल किया जा रहा है और मुरीद कह रहा है यह गुनाह है लेकिन तौबह से पाक व साफ़ हो जायेंगे। थानवी के भाई अकबर अली रैंडियों के साथ सफ़र के दौरान तवाइफ़ो का खाना भी साफ़ कर जाते हैं और ज़ामिन अली जलालाबादी तो शराफ़त की सारी हदों को तजावुज़ कर गये और जो तब्लीग़ का तरीक़ए कार बताया यक़ीनन उनकी कमीनगी और ख़ुबासत की अलामत थी।

यह वह लोग हैं जिनकी तअलीमात को आम किया जा रहा है और उनकी किताबों को घरों की अलमारियों में सजाने का पैग़ाम दिया जा रहा है। यहाँ तक कि उनकी किताबों को लड़कियों को जहेज़ में देना और पढ़ने की तलक़ीन करना कारे सवाब बताया जा रहा है। होश के नाखून पैदा करो और उन बे लगाम और ग़लीज़ ज़बान इस्तेअमाल करने वालों से पूछो कि ऐ ज़ालिम! अगर तेरी किताबों को दुख़्तराने इस्लाम पढ़ेंगी तो

क्या असर कुबूल करेंगी ? लेकिन उन्होंने अपने घर की बहू बेटियों को भी तब्लीग़ का तरीक़ए कार वही बता रख्खा है जो किताबों में दर्ज है।

अगर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ न लाते तो मिल्लत की दो शीज़ाओं का क्या हाल होता, क्या लड़कियाँ ज़िन्दह ज़ेरे ज़मीन दफ़्न नहीं की जा रही थीं ? क्या औरतों के साथ वहशी जानवरों सा सुलूक रवा न था ? क्या औरतें शौहरों की चिताओं पर ज़िन्दह न जलायी जाती थीं ? क्या औरतें नागिन न कहलाती थी ? क्या लड़कियों का वजूद मनहूस न था ? ज़रूर था। यह सदक़ह और करम है ताजदारे दो आलम नबी-ए-बरहक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का। आज वहाबी दिबन्दी हज़रात के घर की औरतें चली हैं तब्लीग़ करने जिस के पीछे रसूल दुशमनी कार फ़रमा होती है तब्लीग़ी निसाब, फ़ज़ाइले आमाल, बहिश्ती ज़ेवर, घरों में पढ़ कर सादह लैह ख़वातीन को गुमराह करती हैं और तेज़ी के साथ अक़ाइद को बिगाड़ कर वहाबियत के रंग में रंगने की कोशिश कर रही हैं । लेकिन फ़ज़ाइले अक़ाइद से नाबलद हैं जबकि अक़ीदह के बग़ैर ईमान नहीं।

अक़ीदह अस्ल है पहले ज़हन व फ़िक्र और क़ल्बो जिगर की ततहीर होनी चाहिए बअदहू हुब्बे इलाही, हुब्बे रसूल की नग़मह सरायी, फिर दर्स व तदरीस का अनोखा तरीक़ह अपनाना चाहिए। मगर ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जब अक़ीदह सहीह हो जायेगा तो दिवबन्दियत का मअजून बे असर हो जायेगा और वहाबियत का चोखा रंग फीका पड़ जायेगा और शोअबदह बाज़ अपना कमाल दिखाने से क़ासिर हो जायेंगे, यहाँ तक कि मौदूदियत का जादुई चिराग़ बुझ कर

मोहब्बते रसूल की शमअ जल उठेगी। फिर सहीहुल अक़ीदह आला हज़रत की ज़बान में पुकार उठेंगे।

ग़ैज में जल जायें बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये
(सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम)

अकाबिरीने दिवबन्द की बचपन की शरारतें

(1) एक मरतबह शाह अब्दुल अज़ीज़ का वअज़ हो रहा था, इतने में मोलवी इस्माईल आये और सबकी जूतियाँ लेकर सक़ाबा में डाल दीं बअदे वअज़ लोगों को तलाश हुई, शाह साहिब को इत्तेलअ की, शाह साहिब ने फ़रमाया यह इस्माईल की शरारत होगी सक़ाबा में न डाल दी हो, लोगों ने सक़ाबा को जाकर देखा तो उसमें उबल रही थीं, बचपन था और बवजहे मोहब्बत किसी को नागवारी भी नहीं थी।

(हवालह : हिकायाते औलिया, हिकायत नं० ८५, स० १२०)

(2) थानवी ने कहा कि एक दफ़अ मुझे क्या शरारत सूझी कि बरसात का ज़माना था मगर ऐसा कि कभी बरस गया कभी खुल गया मगर चारपाइयाँ बाहर ही बिछती थीं, जब बरसने लगा चारपाइयाँ अन्दर कर लीं जब खुल गया बाहर बिछा लीं। वालिदह साहिबह का इन्तेक़ाल हो चुका था। बस वालिद साहिब और हम दोनों भाई ही मकान में रहते थे, तीनों की चारपाइयाँ मिली हुई बिछी थीं एक दिन मैने चुपके से तीनों चारपाइयों के पाये रस्सी से आपस में खूब कसके बाँध दी, अब रात को जो मीहँ बरसना शुरु हुवा तो वालिद साहिब जिधर से भी घसीटते हैं तीनों चारपाइयाँ एक साथ घसिटती चली आती हैं रस्सियाँ खोलते हैं तो खुलती नहीं, खूब कसके

बाँधी गयी थी, काटना चाहा तो चाकू नहीं मिलता, ग़र्ज़ बड़ी परेशानी हुई और बड़ी मुश्किल से पाये खुल सके और चारपाइयाँ अन्दर ले जायी जा सकी इस में इतनी देर हो गयी कि ख़ूब भीग गये, वालिद साहिब बड़े ख़फ़ा हुए कि यह क्या ना मअकूल हरकत थी।

(हवालह १, अशरफुस्सवानेह जि० १, स० १९)

(हवालह २, अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि०२, क़िस्त १०, मलफूज़ ८३७, स० ४७४)

(3) थानवी ने कहा एक मरतबह मेरठ में मियाँ इलाही बख़्श साहिब मरहूम की कोठी में जो मस्जिद है सब नमाज़ियों के जूते जमअ करके उसके शामियाना पर फेंक दिये, नमाज़ियों में गुल मचा कि जूते क्या हुये, एक शख़्स ने कहा कि यह लटक रहे हैं मगर किसी ने कुछ न कहा, यह ख़ुदा का फ़ज़्ल था बावजूद इन हरकतों के अज़िय्यत किसी ने नहीं पहुँचायी वह ही क़िस्सह रहा जैसा कि किसी ने कहा है

तुम को आता है प्यार पर गुस्सह
हमको गुस्सह पर प्यार आता है

यह सब अल्लाह की तरफ़ से है वरनह ऐसी हरकतों पर पिटाई हुवा करती है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० २, क़िस्त १०, मलफूज़ ८३७, स० ४७५)

(4) थानवी ने कहा कि मैं एक रोज़ पेशाब कर रहा था, भाई साहिब ने आकर मेरे सर पर पेशाब करना शुरु कर दिया। एक रोज़ ऐसा हुवा कि भाई साहिब पेशाब कर रहे थे मैंने उनके सर पर पेशाब करना शुरु कर दिया, इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त वालिद साहिब तशरीफ़ ले आये, फ़रमाया यह क्या हरकत है? मैंने अर्ज़ किया एक रोज़ इन्होंने मेरे सर पर पेशाब किया था,

भाई ने इसका बिलकुल इनकार कर दिया, मुख़्तसर सी पिटाई हुई इस लिए कि मेरा तो दअवा रह गया था, सुबूत के लिये कुछ न था और मेरे फ़ेअल का मुशाहिदह था ग़र्ज़ जो किसी को न सूझती थी वह हम दोनों भाइयों को सूझती थी।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० २, क़िस्त १०, मलफ़ूज़ ८३७, स० ४७५)

(5) थानवी ने कहा कि एक साहिब थे सेकरी के हमारे सौतेली वालिदह के भाई बहुत ही नेक और सादह आदमी थे, वालिद साहिब ने उनको ठेका के काम पर रख छोड़ा था, एक मरतबह गरमी में भूखे प्यासे परेशान घर आये और खाना निकाल कर खाने में मशग़ूल हो गये घर के सामने बाज़ार से मैंने सड़क पर से एक कुत्ते का पिल्ला छोटा सा पकड़ कर घर लाकर उनकी दाल की रकाबी में रख दिया, बेचारे रोटी छोड़ कर खड़े हो गये और कुछ न कहा।

(हवालह २, अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० २, क़िस्त १०, मलफ़ूज़ ८३७, स० ४७५)

(6) थानवी ने बरिवायत मोलवी अब्दुल क़य्यूम बयान किया कि मौलाना शहीद इब्तिदा में निहायत आज़ाद थे, कोई मेला ख़्वाह हिन्दुओं का हो या मुसलमानों का ऐसा न होता था जिस में वह शरीक न होते थे और खेल भी हर क़िस्म के खेलते थे, कंकवा भी उड़ाते थे, शतरंज भी खेलते थे, मगर बावजूद इस आज़ादी के बुर्ज़ुगों का अदब और लिहाज़ इतना था कि पतंग उड़ा रहे हैं, पेच लड़ा रहे हैं, मुख़ालिफ़त के पतंग काटने की कोशिश कर रहे हैं कि इतने में शाह अब्दुल क़ादिर साहिब हुजरह से निकले और आवाज़ दी, इस्माईल! यह आवाज़ सुनते ही फ़ौरन जवाब देते हुज़र जल्द और पतंग को उसी हालत में छोड़ कर चले आते।

(हवालह १ : हिकायाते औलिया हिकायत नं० ६९, स० १०८)

(हवालह २ : अरवाहे सलासह , हिकायत नं० ६९ , स० ८९)

क्या ही दिलचस्प शरारतें हैं

मुतज़क्किरह बाला शरारतों का तअल्लुक़ आम इन्सान से नहीं है। यह वह अफ़राद हैं जो दिवबन्द, वहाबियत के सरख़ेल कहे जाते हैं, कोई हकीमुल उम्मत है तो कोई मुजद्दिद है और कोई जमाअते वहाबियह का बरगुज़ीदह, कोई पतंग बाज़ी कर रहा है, कोई नमाज़ियो के जूते चप्पलों को छप्पर पर फेंक रहा है। थानवी जी ख़ुद एतराफ़ करते हैं कि किसी को जो न सूझती थी वह हम दोनों भाइयों को सूझती थी, यह हैं दिवबन्द के हकीमुल उम्मत जिनकी शरारतों और बदकारियों को करामत बताया जा रहा है और जिनकी किताबों को हर घर में होना ज़रुरी क़रार दिया जा रहा है।

उनकी फ़ित्री ख़ुबासत और नजिस तबीअत ही का कमाल है जो रसूल दुशमनी पर आमादह करती हैं, वरनह अहले मोहब्बत के लिए तो नबी-ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम की ज़ाते बाबरकात सबबे फ़रहत व ज़रीअए बरकत है, बारगाहे ख़ुदा व जल्ल जलालहू व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अकाबिरीने दिवबन्द अपनी शरारतों को किस तरह पेश करेंगे, यह वहाबी जमाअत के अफ़राद जानते हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में ऐसी घिनावनी शरारतें करने वाले अफ़राद के शर से महफ़ूज़ रख्खे। (आमीन)

पीर और मुरीद के रुहानी रिश्तह के लिये फ़हश मिसालें

(1) थानवी को एक शख़्स ने लिखा कि मैंने तमाम गुनाहों से तौबह की और आप के हाथ पर बैअत की, थानवी ने कहा कि उन का यह लिखना ऐसा है जैसे कोई शख़्स किसी औरत को लिखे कि मैंने तौबह की मुजर्रद, यअनी अकेले रहने से और निकाह करता हूँ तेरे साथ। तो क्या यही तरीक़ह है निकाह का? औरत मंज़ूर करे या न करे, यह उसकी मर्ज़ी है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० २, हिस्सह ३, क़िस्त १६, मलफ़ूज़ ५५१, स० १८)

(2) थानवी का कहना कि बअज़ लोग ऐसे आते हैं कि ख़ुद ही जी चाहता है कि हम से मुरीद हो जायें लेकिन ख़ुद कहने में शर्म आती है, जैसे कि लड़की के निकाह में यह कहने में शर्म आती है कि हमारी लड़की से निकाह कर लो।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० १, हिस्सह ३, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ४५०, स० ७४)

(3) बक़ौले थानवी: मियाँ बीवी ख़त के ज़रीअह मोहब्बत करें और मिलते जुलते न हों तो औलाद न होगी, इसी तरह बेदूने (बग़ैर) सोहबते शैख़ पीर का फ़ैज़ भी न मिलेगा।

(हवाल १ : कमालाते अशरफ़ियह (१९९५) बाब १, मलफ़ूज़ ७५४, स० १९३)

(हवालह २ : हसनुल अज़ीज़, जि० १, हिस्सह १, क़िस्त १६, मलफ़ूज़ १९, स० २४)

(4) बक़ौले थानवी शैख़ के साथ मुरीद का तअल्लुक़ ख़ाविन्द और बीवी जैसा चाहिये।

(हवाल : कमालाते अशरफ़ियह (१९९५) बाब १, मलफ़ूज़ ७११, स० १८०)

(5) एक दुरवेश के हाथ और रुख़सार उनके मुरीद ने चूमे, उस पर थानवी ने कहा कि यह तो ऐसा है जैसे कोई अपनी बीवी के साथ करे, ख़ैर बीवियाँ तो उसकी महल हैं, लेकिन सबके सामने चूमना पूरी बे हयाई है, मगर मर्द तो उसके महेल ही नहीं।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० ३, हिस्सह १, क़िस्त १२, स० ६३)

(6) बैअत में जल्दी अच्छी नहीं बल्कि पीर से ख़ूब मोहब्बत हो जायेतब फ़ाइदह है, यह समझाने के लिये थानवी ने फ़हश मिसाल दी कि एक निकाह तो यह होता है कि माँ बाप ने करा दिया और फिर निकाह के बअद बीवी से मोहब्बत हो जाये और एक निकाह यह होता है कि किसी पर आशिक़ हो जाये फिर निकाह हो, दोनों निकाहों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है, इसी तरह बैअत भी है।

(हवालह १ : हसनुल अज़ीज़, जि० ३, हिस्सह १, क़िस्त १२, स० २०४)

(हवालह २ : अशरफुस्सवानेह जि० २, स० १६८)

(हवाल ३ : कमालाते अशरफ़ियह (१९९५) बाब १, मलफूज़ ६५२, स० १६४)

(7) बक़ौल थानवी मुरीद और शैख़ में मुनासिबत होनी चाहिये, मियाँ बीवी का सा क़िस्सह है, दोनों मे निबाह जब ही हो सकता है जब कि तबई मुनासिबत दोनों में हो, इस मुनासिबत का कोई ज़ाबतह और क़ाइदह नहीं जैसे कि मर्द और औरत में मुनासिबत का मिअयार कुछ हुस्न व जमाल नहीं, बअज़ हसीन औरतों की मियाँ से नहीं बनती और बद सूरत औरतों की शौहर के साथ मवाफ़िक़त ख़ूब होती है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० ४, हिस्सह १, क़िस्त १०, स० १३२)

(8) बक़ौल थानवी : बैअत का इलाक़ह ज़ौजियत से ज़्यादह है लेकिन लोग वहाँ हुस्न व जमाल को देखते हैं और यहाँ फ़ज़्ल व कमाल को नहीं देखते।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़, जि० ३, हिस्सह २, क़िस्त १३, स० १९५)

(9) शैख़े फ़रुर शैख़े मुहक़्क़िक़ में फ़र्क़ है, यह समझाने के लिये मिसाल देते हुये थानवी ने कहा कि बाज़ारी औरत और शरीफ़ घिरि सतन की सी उसकी मिसाल है। बाज़ारी औरत हर क़िस्म की दिलजूयी का इन्तेज़ाम करेगी, बनाओ सिंगार, चिकनी

चुपड़ी बातें करेगी और शरीफ़ अफ़ीफ़ घिरि सतन नाक पर मख्खी भी नहीं बैठने देगी, उसकी एक शान होती है। इसी तरह शैख़े फ़रूर और शैख़े मुहक़्क़िक़ में फ़र्क़ है।

(हवाला अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० १, क़िस्त १, मलफ़ूज़ १९१, स० ११६)

(10) थानवी का कहना है कि देखिये बाज़ारी औरत से इश्क़ होता है तो उसके कितने नाज़ उठाये जाते हैं। क्या शैख़ की इतनी भी वक़अत नहीं जितनी बाज़ारी औरत की ? और फिर वह कम्बख़्त लूटती है, सताती है, तरसाती है, वअदह ख़िलाफ़ी करती है, बेवफ़ाई करती है बावजूद इन सब बातों के उसके नाज़ उठाये जाते हैं और ज़रा दिल पर कुदूरत के आसार तक पैदा नहीं होते और यहाँ ज़रा ज़रा सी बात पर दिल में नागवारी व कुदूरत पैदा होती है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ४, क़िस्त १९, मलफ़ूज़ ६७५, स० ३७६)

(11) बक़ौल थानवी : एक वक़्त में दो मुसलेह से तअल्लुक़ रखना ऐसा है जैसा कि कोई औरत एक वक़्त में दो मर्दों से तअल्लुक़ रख्खे।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ४, क़िस्त १९, मलफ़ूज़ ६२४, स० ३४२)

(12) थानवी का कहना है कि कुंवारी लड़की और बेवह से निकाह करने में यह फ़र्क़ है कि कुंवारी लड़की को जिस रंग में चाहो ले आओ लेकिन बेवह में अगले शौहर का असर ज़रूर होता है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ५४३, स० ५९)

(13) बेदूने मुनासिबत शैख़ कुछ नफ़अ नहीं होता, यह समझाने के लिए थानवी ने मिसाल दी है कि अगर ज़ौजैन तन्दुरुस्त और क़वी हों लेकिन तवाफ़िक़े इन्ज़ाल न हो तो हमल क़रार

नहीं पाता। इसी तरह शैख़ व तालिब में तवाफ़िक़े तबअ न हो तो फिर तअल्लुक़ ही अबस (बेकार) है ।

(हवालह : अशरफुस्सवानेह, जि० २, स० ४८)

(14) थानवी ने कहा कि वह औरत फ़ाहिशह है जो अपने ख़ाविन्द के सिवा दूसरे पर नज़र रख्खे, फिर थानवी ने हिकायत बयान की कि पहली वाले बद शक्ल आदमी की हसीन बीवी को एक मोलवी का देखना लेकिन उस औरत ने मोलवी की तरफ़ रुख़ भी न किया। यह हिकायत बयान करने के बअद थानवी ने कहा कि मुरीद का शैख़ के साथ जो तअल्लुक़ है वह ऐसा ही है जैसा कि ख़ाविन्द और बीवी का, शैख़ को यह समझे कि मेरे लिये सब से अनफ़अ यही है।

(हवालह : हसनुल अज़ीज़ जि० २, हिस्सह ३, क़िस्त १६, मलफ़ूज़ ७३०, स० ९३)

पीरी या शहवत परस्ती

थानवी जी ने शहवत अंगेज़ और मुख़्रिब अख़्लाक़ लिटरेचर को भी पीछे छोड़ दिया, पीर और मुरीद के रुहानी रिश्तह के लिये मिसालों का अम्बार लगा दिया, पूरा इक़तिबास हवालह से जकड़ा हुवा है और यह किताबें राक़िमुल हुरूफ़ के पास मौजूद हैं, संजीदह ज़हेन व फ़िक्र के हामिल अफ़राद ग़ौर करें क्या ऐसी मिसालें देना जिस से फ़हाशी और उरयानियत अयाँ हो, एक पीर का देना वह भी दिवबन्द का हकीमुल उम्मत कहाँ तक दुरुस्त है ?

बिला शुब्ह हकीमुल उम्मत कि कहानी, उन्हीं की ज़बानी अनोखे ख़्वाबों के रंगों, नींद के गहरे समुन्द्र में आगही की शमअ

जैसी पुर कशिश, चाँदनी रुतों के बेकराँ नूर में रक़्स करती नींद की शहज़ादियों जैसी फ़रेबे नज़र, दश्त व सहरा में आवारह गर्द जाँ शोज़ नग़्मों जैसी दिलसोज़ और ज़िन्दगी का कोहना आहंग क़दीम असातीर जैसी पुर जज़्ब और ऐश व इशरत के महलों के मँझे हुये शहज़ादों जैसे हो के रह गयी है। हकीसुल उम्मत साहिब तुम्हारे लफ़्ज़ों में आग, अज़हान व कुलूब में ज़हेर भरने वाले, झूठ नगर के बासी और कड़वाहट के मौसमे हू की तरह हैं तुम्हारी पूरी क़ौम ज़िल्लत व रुसवायी भरा लम्हा हैं जो किसी ख़ूनी इनक़लाबी का मुनतज़िर रहता हो, तुम्हारे फ़िक्र व नज़र से हम ख़ूब वाक़िफ़ हैं, तुम्हारी जमाअत के लोग तुम्हारे उयूब की परदह पोशी करने की हत्तल इमकान कोशिश करते हैं मगर यह वक़्त की सितम ज़रीफ़ी है कि तुम्हारे हालात और तुम्हारे हुज्ल-ए-शबे विसाल का तज़किरह तुम्हारे ही मकतबे फ़िक्र के लोग मज़मूम किताबों के ज़रीअह आम कर रहे हैं जो शायद तुम्हारे देरीनह ख़्वाबों की तअबीर हो। बहेर हाल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ है कि तुम्हारे जैसे पीरों से हर किसी को महफ़ूज़ रख्खे। (आमीन)

ख़्वाब के ज़रीअह तौहीने नबी व उम्महातुल मोमिनीन

(1) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मआज़ अल्लाह मैंने ज़ौजये मुतह्हरह के साथ हमबिस्तरी की। जवाब में थानवी ने उसको तसल्ली देते हुए लिखा कि आप किसी शेई मस्अलह के मोअतक़िद हैं और वह मस्अलह इस्तिन्जे के

मुतअल्लिक़ है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ३, क़िस्त १९, मलफ़ूज़ २७१, स० २७३)

(2) एक शख़्स ने थानवी को लिखा कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैंने हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अनहा के साथ नाज़ेबा हरकत की। जबाव में थानवी ने लिखा कि आप को किसी ऐसे मसायेल में तरद्दुद है जो उस अज़ू (अज़्वे तनासुल) साथ मुतअल्लिक़ है। यह जवाब लिखने के बअद थानवी ने खुद अपनी तअरीफ़ करते हुए कहा कि इस शख़्स ने मेरी शख़्सियत पर तअज्जुब किया कि मैंने उसका शुब्हा पकड़ लिया, उस शख़्स ने कहा कि मैं ढ़ीला से इस्तिन्जा सुखलाने का क़ायेल व आमिल न था।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० ४, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ५२५, स० ४९)

(३) हाजी इमदादुल्लाह ने ख़्वाब देखा कि उनकी भावज महमानों का खाना पका रही हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और आप की भावज से फ़रमाया कि इमदादुल्लाह के महमान उलमा हैं, उन महमानों का खाना मैं एकाऊँगा।

(हवालह १ : तज़्किरतुं रशीद, जिं० १, स० ४६)

(हवालह २ : हसनुल अज़ीज़ जि० १, हिस्सह० ४, क़िस्त १९, मलफ़ूज़ ५९३, स० ५२)

हवालह ३ : सवानेह क़ासमी जि० १, स० ८४)

(4) एक साहेल ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुये तो आप को उर्दू में कलाम करते देख कर पूछा कि आप को यह कलाम कहाँ से आगयी, आप तो अरबी हैं? फ़रमाया कि जब से उलमाये मदरस-ए-दिवबन्द से हमारा तअल्लुक़ हुवा, हमको यह ज़बान आगयी।

(हवालह : बराहीने क़ातिअह, स० ३०)

(5) शाह इस्हाक़ ने ख़्वाब में देखा कि मआज़ अल्लाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाशे मुबारक चौराहे पर बे कफ़न पड़ी है और लोग उसको पाँव लगाते हुये चलते हैं, यह ख़्वाब देखने के बअद उन्हों ने हिन्दुस्तान से हिजरत करली।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० २, क़िस्त ११, मलफ़ूज़ ५१, स० ३९)

(6) थानवी ने ख़्वाब में हज़रत आइशह रज़ियल्लाहु अन्हा की तशरीफ़ आवरी का ज़िक्र करके यह तअबीर निकाली कि मेरी नयी बेगम की उम्र में और मेरी उम्र में जो तफ़ावुत है वह मिस्ले हज़रत आइशह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र में तफ़ावुत के है।

(हवालह : अलइफ़ाज़ातुल यौमियह (दिवबन्द) जि० १, क़िस्त १, मलफ़ूज़ ११२, स० ६०)

(7) ख़्वाब में हुज़र सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमअ की नमाज़ थानवी की इक़तिदा में पढ़ी, थानवी ने हुज़ूर की इमामत की।

(हवालह : अशरफुस्सवानेह जि० ३, स० ९६)

(8) ख़्वाब में सर ज़मीने मक्कह की वसीअ मैदान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायें जानिब थानवी, असहाब का कसीर मजमअ इधर उधर, ख़्वाब देखने वाले की हुज़ूर से दरख़्वास्ते बैअत, हुज़ूर का अहदे बैअत लेना शुरुअ करना, थानवी ने हुज़ूर की मआज़ अल्लाह रहबरी करते हुये कहा कि इनसे अहेद लीजिये कि कुर्सी पर न बैठेंगे, थानवी के कहने के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुर्सी पर न बैठने का अहेद लिया।

(हवालह : अशरफुस्सवानेह जि० ३, स० १०१)

उम्मते मोहम्मदियह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदतरीन लोग

मुन्दरिजह बाला इक़तिबासात पढ़ने के बअद रूह काँप उठती है, इन्सानियत की चींख़ निकल जाती है, ज़ालिम व बेहया लोगों ने पासे अदब के सारे हुदूद तोड़ दिये।

एक मरदूद तो ख़्वाब में देख रहा है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाशे मुबारकह पर ठोकर लगाता हुवा गुज़रता है (मआज़ अल्लाह) नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखना हक़ीक़त का दर्जह रखता है। क्योंकि आप की शक्ल में शैतान आ ही नहीं सकता फिर भी मरदूद दअवा कर रहा है कि मैंने देखा और लाशे मुबारकह पर ठोकर मारी।

एक सालेह ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत करते हैं तो सरकार उर्दू में कलाम करते हैं, उर्दू ज़बान दानी पर सवाल होता है तो फ़रमाते हैं जब से उलमाए मदरसए दिवबन्द से हमारा मआमिलह हुवा हमको यह ज़बान आगयी।

कोई अपने भावुज के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महमान उलमा के लिये खाना पकवा रहा है और थाना भवन के गुन्डे ने तो हद कर दी, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने के मुताबिक़ कुर्सी पर न बैठने का अहेद लेते हैं, उसके इलावह महबूबए सरवरे काइनात उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की शान में किस क़द्र ईमान सोज़ और लग़वियात बातें की हैं, क्या यह एक वफ़ा दार उम्मती और गुलामे नबी का काम हो सकता है? हरगिज़ नहीं! यह सब माद्दी मफ़ादात के तहेत क़ाम अंजाम दिये गये हैं।

हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

जिनकी पाकीज़गी व ततहीर की गवाही कुरआन दे रहा है जो सारी उम्मत की माँ हैं, जिनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब अहादीस में बयान किये गये हैं, उनकी ज़ात के साथ किस तरह अशरफ़ अली थानवी ने अपनी नजिस ख़मीर और फ़ित्री नजासत का मुज़ाहिरह किया है। जो लोग ख़ुद अपनी आँखों से इन वाक़िआत को पढ़ेंगे, उन्हें क़तई इतमीनान हो जायेगा और इन ज़ालिमों के कुफ़्र व शिर्क में कोई शुब्ह न करेंगे।

हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को जिन्दगी भर की पुर सोज़ रिफ़ाक़त को यह क़ाबिले रश्क सिलह अता हुवा कि वह क़यामत तक के लिये आयाते कुरआनियह का उनवान बन गयीं, जब जब क़ारी के सीने से तिलावते कुरआन के नग़में उबलते रहेंगे। हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के तज़किर-ए-जमील की खुशबू से दुनिया मुअत्तर होती रहेगी। उलमाये दिवबन्द की किताबें तक़वियतुल ईमान, तहज़ीरुन्नास, हिफ़ज़ुल ईमान, फ़तावा रशीदियह, बहिशती ज़ेवर, बराहीने क़ातिअह वग़ैरह, की इबारतें इहानते रसूल के ज़हेर से शराबोर हैं, फ़िक्री नहूसत, नफ़्स की पैरवी, ग़लत तावीलात, जहाँ से कुफ़्र की शराब टपकती है और शिर्क का दरवाज़ह खुलता है और दाइमी हलाकत का नुस्ख़ह, अम्बिया की तनक़ीस, औलिया-ए-केबार की शान में गुस्ताख़ियाँ उम्महातुल मोमिनीन की शान में नाज़ेबा कलिमात गोया मज़कूरह किताबों में गुनाह दर गुनाह का दाइरह, जलती अज़ाब की राह और अनगिन्त वसवसों के गर्द सैले आतिश व तूफ़ाँ, माहौल की बे चैनी, बे चेहरगी के अलमिये और कसरते आलाम में बरहनह व बरहम आग के शोअले, जीवन के सागर में ग़मों की भीड़, ख़्यालों की नई दुनया में ख़्वाब आवर उम्मीदें और मोहब्बत के जोश मारते

हुरुफ़ के अन्दर से निकलने वाले ख़ूँ ख़्वार घने अज़ाब, अन्धे ग़ारों की हबस ज़दह सोचें, भूकी जिबिल्लतें, सफ़हए हस्ती से मिटाने वाले रक़्से शरर, नफ़स नफ़स ज़हेर और एहसास के हर जज़्बे को मसलूब कर देने वाले, हुनर, इज़ारे जाँ का हर फ़न और महबूबे रब्बुल आलमीन जाने ईमान, शाफ़ए रोज़े शुमार, नाइबे परवर दिगार, ख़ुदाये लमयज़ल के राज़ दार बाइसे तख़्लीक़े काइनात जनाबे मोहम्मदुं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिश्तह मुनक़तअ करने की पूरी सलाहियत और चराग़े शमए उलफ़त को बुझाने के लिए हर हरबह व तरीक़ह उन किताबों मे मौजूद है, अब भी अगर किसी को यक़ीन की मंज़िल न मिली हो तो उन किताबों को मंग्वा कर देख सकता है।

हमारी जमाअत, जमाअते अहले सुन्नत के अकाबिरीन ने उन किताबों का खूब खूब तअक़्क़ुब किया और उनके स्याह चेहरे को बे नक़ाब किया है. अल्लाह तआला हम सबको अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में उन से दूर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। (आमीन)

सिराजुल क़ादरी बहराइची
बानी व मोहतमिम साबिरी यतीम ख़ानह जामिअह
सरकारे आला हज़रत
गंगवल बाज़ार बहराइच शरीफ़ यूपी

☆☆☆